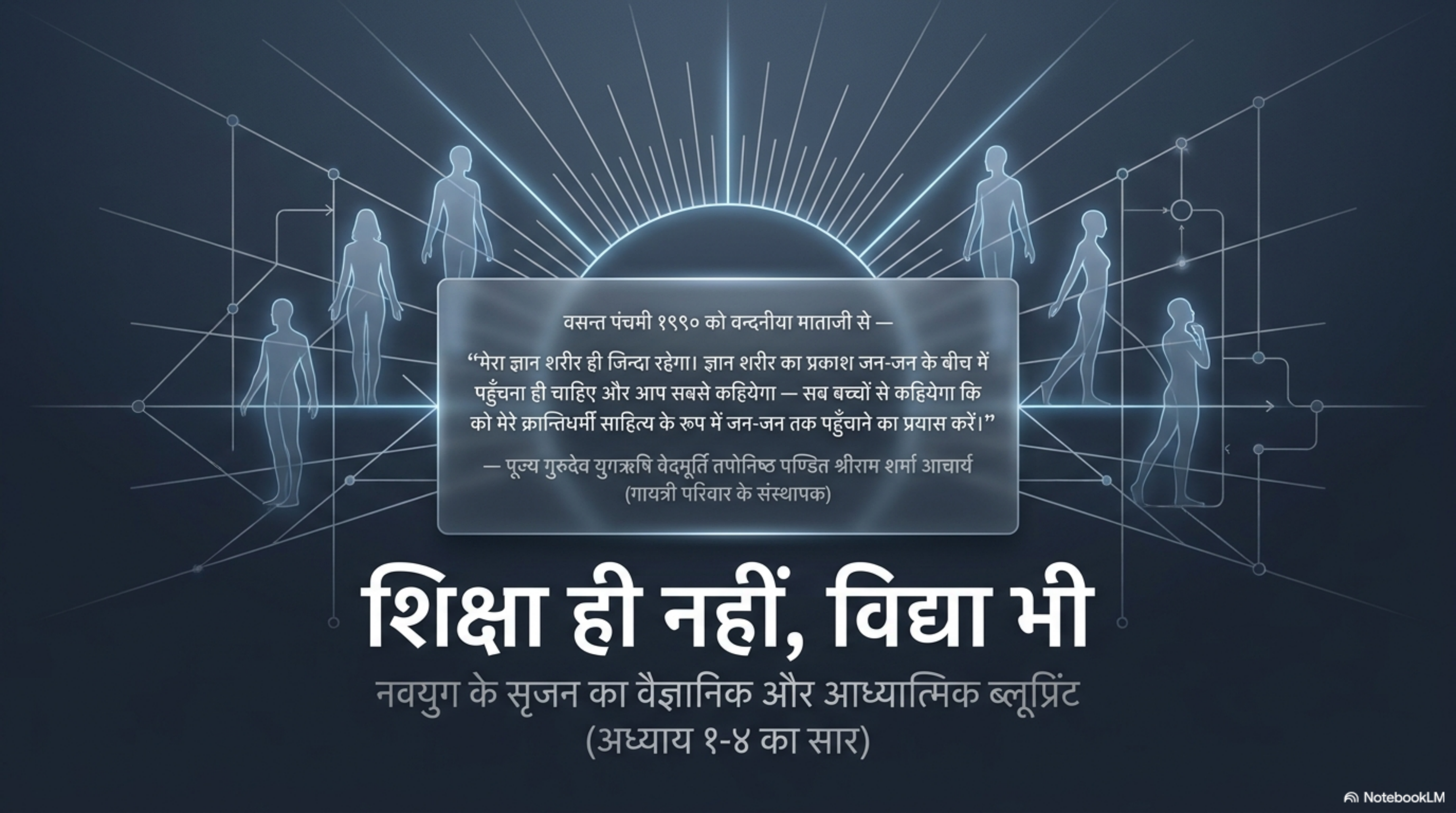




वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

शिक्षा ही नहीं, विद्या भी

नवयुग के सृजन का वैज्ञानिक और आध्यात्मिक ब्लूप्रिंट
(अध्याय १-४ का सार)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी कहियेगा कि मेरे साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वर्तमान संकट की वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक जड़ (अध्याय १)

१. अदूरदर्शिता और संकीर्ण स्वार्थपरता
(Short-sighted selfishness / 'इक्कड़' वृत्ति)

२. प्राकृतिक और मानवीय संसाधनों का
अंधाधुंध दोहन

३. निष्ठुरता, अपराध, प्रदूषण और
अविश्वास का विस्तार

४. सर्वांगीण पतन
(Total collapse)

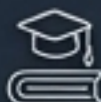
मनोविज्ञान (Psychology): मनुष्य की तात्कालिक रसास्वाद (Short-term gratification) की प्रवृत्ति डोपामाइन (Dopamine) लत का परिणाम है, जो अदूरदर्शिता को जन्म देती है।

२१वीं सदी में प्रवेश के लिए केवल आकृतियाँ (भौतिक विकास) नहीं, बल्कि प्रकृतियाँ (मान्यताएं और विचार) बदलनी होंगी। नई भाषा सीखने की तरह, हमें नए सिरे से जीवन-मूल्य सीखने होंगे।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

नवसृजन के महाशिल्पी: शिक्षा बनाम विद्या

समाजशास्त्र (Sociology): केवल साक्षरता (Literacy) कौशल (Skills) बढ़ाती है, जबकि 'विद्या' संज्ञानात्मक सहानुभूति (Cognitive Empathy) और सामाजिक उत्तरदायित्व (Prosocial Behavior) विकसित करती है।

शिक्षा (Education / Literacy)	विद्या (True Knowledge / Wisdom)
 उद्देश्य: आजीविका और साक्षरता	 उद्देश्य: चरित्र निर्माण और भाव-संवेदना
 परिणाम: आत्मकेंद्रित और स्वार्थी बना सकती है	 परिणाम: देव-मानव का निर्माण
 आवश्यकता: किताबी ज्ञान और डिग्रियां	 आवश्यकता: चुम्बकीय व्यक्तित्व और आदर्श आचरण

हमें ऐसे ‘सृजन विद्या के प्राध्यापकों’ की आवश्यकता है जो गहरी कीचड़ में फँसे समाज को बाहर निकालने का साहस रखें—जैसे एक हिम्मती नाविक तूफान में नाव पार लगाता है।

युग शिल्पी का व्यक्तिगत समीकरण

जीव विज्ञान (Biology): पृथ्वी पर मनुष्य ही एकमात्र ऐसा प्राणी है जो अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को न्यूनतम समय में पूरा कर सकता है। शेष ऊर्जा का परोपकार में उपयोग न्यूरोप्लास्टिसिटी (Neuroplasticity) के माध्यम से मस्तिष्क को उच्च चेतना की ओर ले जाता है।

A
संयम (Self-Control)
व्यक्तिगत आवश्यकताओं और महत्वाकांक्षाओं में कटौती। (प्रकृति का नियम: २ घंटे श्रम = २ मुट्ठी अनाज)।

+

B
सेवा-साधना (Service)
बची हुई ऊर्जा, समय और धन का विद्या-विस्तार में नियोजन।

=

C
देवत्व का उदय (Rise of Divinity)
अवांछनीयता के वातावरण को बदलने का अकूत बल।



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

युगचेतना के प्रसार का गणितीय विज्ञान

गणितीय सिद्धान्त (Mathematical Compounding):
छोटे-छोटे प्रयासों का सामूहिक एकत्रीकरण (Synergy)
घातीय वृद्धि (Exponential Growth) उत्पन्न करता है।

२४ लाख प्रज्ञा-पुत्र

न्यूनतम अंशदान

समय: २ घंटे प्रतिदिन
= ४८ लाख घंटे/दिन
(८ लाख लोगों के पूर्णकालिक कार्य के बराबर!)

धन: २० पैसे प्रतिदिन
= ४,८०,००० रुपये प्रतिदिन!

परिणाम

बिना सरकारी सहायता या चंदे के,
प्रतिदिन १ करोड़ लोगों तक नवचेतना का संचार।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश = जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चे के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश = जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चे के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश = जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चे के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश = जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चे के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

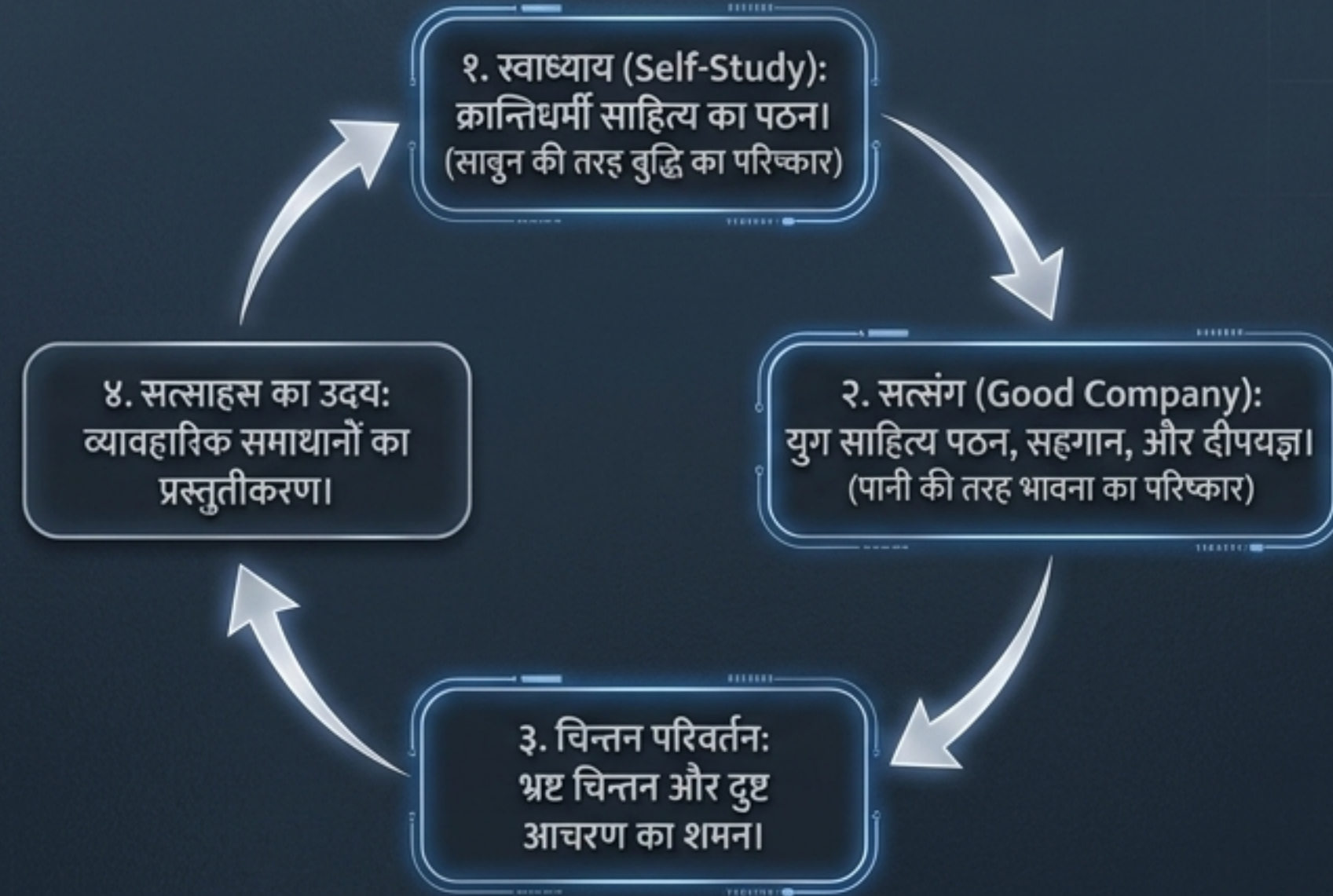
वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश = जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चे के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश = जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चे के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश = जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चे के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

दुर्बुद्धि निवारण का इको-सिस्टम



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

दुर्बुद्धि को साबुन और पानी की तरह स्वाध्याय और सत्संग से ही धोया जा सकता है। शान्तिकुंज का साहित्य बिना कॉपीराइट के, लागत मूल्य पर इसी महान उद्देश्य से सृजा गया है।

जन-जन तक पहुँचने के अभिनव तंत्र

संचार विज्ञान (Communication Science):
मल्टी-सेंसरी इनपुट (Visual, Auditory, Kinesthetic)
स्मृति प्रतिधारण (Memory Retention) को 40% से
80% तक बढ़ा देता है।



वसंत पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

मानव अस्तित्व की त्रि-स्तरीय संरचना

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश
जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा
— सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी
साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य

स्थूल शरीर (Gross Body): भौतिक संरचना। इसका आरोग्य और परिणाम है — ओजस् (Vitality)।

सूक्ष्म शरीर (Subtle Body): दूरदर्शिता (Farsightedness) का केंद्र। इसका आरोग्य और परिणाम है — तेजस् (Brilliance)।



कारण शरीर (Causal Body): भाव-संवेदना (Emotional Core) का निवास। इसका आरोग्य और परिणाम है — वर्चस् (Spiritual Aura)।

क्वांटम भौतिकी और बायोफोटोनिक्स (Quantum Physics & Biophotonics): मानव शरीर केवल पदार्थ नहीं, बल्कि ऊर्जा और चेतना की परतों का जटिल नेटवर्क है, जो इलेक्ट्रोमैग्नेटिक आवृत्तियों पर प्रतिक्रिया करता है।

सूक्ष्म शरीर का विज्ञान: गायत्री महामंत्र

१. इनपुट: गायत्री मंत्र का नियमित जप (न्यूनतम १०८ बार / ५ मिनट)

२. ट्रांसमिशन: ध्वनि तरंगों (Sound Waves) का अन्तराल में प्रवेश

३. एक्टिवेशन: सूक्ष्म शरीर की २४ ग्रन्थियों (24 Glands) का जागरण

४. प्यूरिफिकेशन: गुण, कर्म, स्वभाव का परिष्कार

५. आउटपुट: मेधा का निखार और प्रतिभा का उभार (Enhanced Intellect)

न्यूरोएंडोक्राइनोलॉजी (Neuroendocrinology): विशिष्ट लयबद्ध ध्वनि तरंगें (Chanting) वेगस नर्व (Vagus Nerve) को उत्तेजित करती हैं और पीनियल/पिट्यूटरी ग्रन्थियों (Pineal/Pituitary glands) के स्राव को संतुलित कर मानसिक स्पष्टता बढ़ाती हैं।

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आर आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि
वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित
श्रीराम शर्मा आचार्य

कारण शरीर का विज्ञान: सविता का ध्यान

हेलियोबायोलॉजी (Heliobiology): सूर्य के प्रकाश के फोटॉन्स (Photons) सेलुलर मेटाबॉलिज्म (Cellular Metabolism) को बढ़ाते हैं। ध्यान के दौरान विजुअलाइज़ेशन (Visualization) शरीर में वास्तविक तापीय ऊर्जा (Thermal Energy) और न्यूरोलॉजिकल बदलाव उत्पन्न कर सकता है।

1 **ध्येय (Focus):** प्रातःकालीन उदीयमान सूर्य (Arunabha Savita) का प्रत्यक्ष या मानसिक ध्यान।

3 **परिणाम (Result):** ऊर्जा, उष्णता, और तेजस्विता का समावेश। साधक और सविता का आग और ईंधन की तरह एकाकार होना।

2 **प्रवेश (Entry):** किरणों का स्थूल, सूक्ष्म, और कारण शरीर में प्रवेश।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।
ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना
और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन से वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
— पूज्य गुरुदेव युगगुरु विवेकानन्द का उपास करें।”

युग सन्धि का महा-अनुष्ठान: सामूहिकता की शक्ति

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर
का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए
और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से
कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी
साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का
प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव

कलेक्टिव कॉन्शियसनेस (Collective Consciousness/Maharishi Effect):
जब बड़ी संख्या में लोग एक ही समय पर एक ही चेतना-स्तर (Meditation)
पर एकाग्र होते हैं, तो वे समाज में सकारात्मक ऊर्जा का ‘कोहेरेंस’
(Coherence) उत्पन्न करते हैं।

अणु/Atoms

दृश्य जगत
(Visible World)

धागे/Threads

मजबूत रस्सा
(Strong Rope)

शहद की बूँदें/Honey Drops

छत्ता
(Hive)

उसी प्रकार (Similarly):
२४ लाख परिजनों की दैनिक
५-१० मिनट की साधना
(१ माला जप + ध्यान)

२४ करोड़ गायत्री जप का
दैनिक महाअनुष्ठान

युग सन्धि (१९९०-२०००) रात और दिन के बीच के संधिकाल की तरह है। यह भगीरथ प्रयास इक्कीसवीं सदी का उज्ज्वल भविष्य लायेगा।

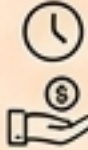
ज्ञान शरीर के संवाहक बनें (आवाहन)



१. अपनाएं: सादा जीवन,
उच्च विचार (संयम)।
अपनी आवश्यकताओं
में कटौती करें।



३. जुड़ें: २४ लाख सृजन सेना
का हिस्सा बनें (न्यूनतम २ घंटे
और २० पैसे का दान)।



२. सीखें: त्रि-शरीर साधना।
प्रतिदिन गायत्री जप और
सविता का ध्यान करें।
ॐ गये मम



४. फैलाएं: झोला पुस्तकालय और
ज्ञान रथ द्वारा क्रान्तिधर्मी साहित्य का
जन-जन तक परिष्कार करें।

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।
ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के
बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप
सबसे कहियेगा — सब बच्चों से
कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को
मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में
जन-जन तक पहुँचाने का
प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव
युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

समय आतुर है। नवसृजन की यह बेला अपनी झोली में असीम शक्तियां भरे हुए है।
गुरुदेव के क्रान्तिधर्मी साहित्य को हर घर तक पहुँचाकर उनके ‘ज्ञान शरीर’ को जीवंत रखें।